फसल की कटाई के बाद का प्रबंधन :

- जड़ों को टुकड़ों में काटकर 2–3 दिन धूप में और 10–12 दिन तक छाया में सुखाया जाता है।
- सूखी जड़ों को ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहां आर्द्रता 10% से अधिक न हो। इन्हें पॉलिथिन के थैलों में स्टोर किया जाता है।
- इन सूखी जड़ों के छोटे–छोटे टुकड़े बनाकर इनकी मोटाई के आधार पर छांटकर ग्रेडिंग की जाती है और ग्रेड अनुसार स्टोर किया जाता है।
- सूखी जड़ों की पैदावार प्रति हेक्टेयर 2.5–5.0 टन (गुजरात) में, 7.0 टन (हरियाणा) तक हो जाती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023

दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827

ईमेल : info-nmpb@nic.in | वेबसाइट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास (क) भारतीय बागबानी अनुसंधान (आई आई एच आर), बेंगलुरु और (ख) गुजरात कृषि विश्वविद्यालय, आणंद, गुजरात एवं (ग) कृषि महाविद्यालय, सी सी एस, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा किया गया है।

मुलेठी की खेती

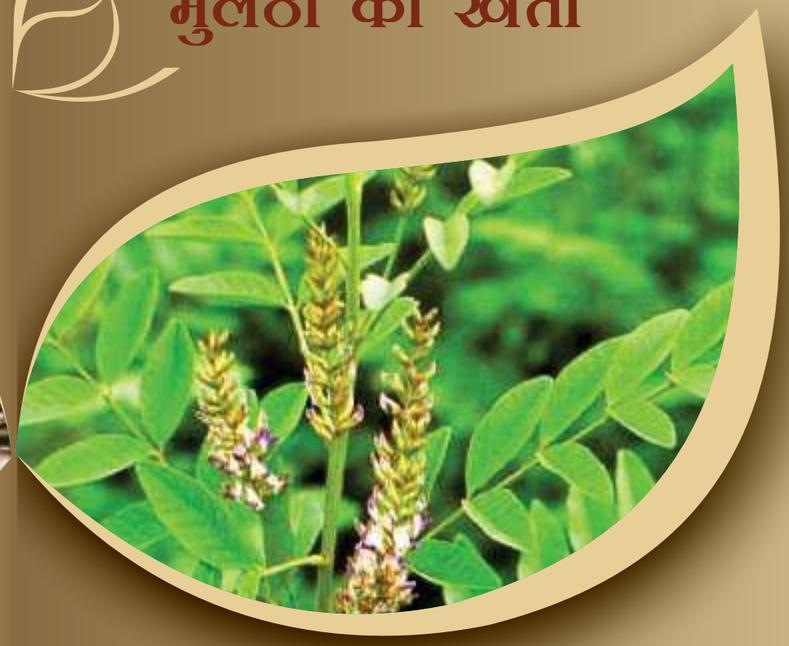

सामान्य नाम : मुलेठी
वानस्पतिक नाम : ग्लाईसिरइज़ा ग्लैबरा
कुल : फेबीयेसी
उपयोगी भाग : जड़ व भूस्तरी तना
सामान्य उपयोग : जड़ शामक, कफ निवारक और जलन निरोधक है। सत्व (अर्क) टॉनिक में मिठास के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इसका उपयोग गले की खराश और खांसी दूर करने के लिए भी किया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

मुलेठी

ग्लाईसिराइजा ग्लैबरा

कुल–फेबीयसी

यह एक सदाबहार झाड़ी है जिसकी ऊंचाई 120 सेमी. तक होती है।

जलवायु व मिट्टी :

- यह भारत के उत्तरी – पश्चिमी क्षेत्र में उप उष्ण कटिबंधीय जलवायु में अच्छी उगती है।
- मुलेठी उर्वरक युक्त रेतीली–चिकनी मिट्टी में ज्यादातर पाया जाता है।

रोपण सामग्री :

- इसे उगाने के लिए लगभग 10–15 सेंटीमीटर के भूस्तरी जड़ीय टुकड़े काटे जाते हैं।
- क्योंकि बीजों का अंकुरण ठीक से नहीं होता अतः इसे वानस्पतिक विधि द्वारा उगाना ही उपयुक्त है।
- 'हरियाणा मुलेठी नं. 1' किस्म, जिसे चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, द्वारा विकसित किया गया है, की बुआई करना उपयुक्त है।

पौध :

- पतझड़ के दौरान सुखाई गई पुरानी जड़ों को 10–15 सेंटीमीटर की लम्बाई में इस तरह विभाजित किया जाता है कि उसमें 2–3 अंकुरण हों।

खेत में लगाना

जमीन की तैयारी और उर्वरक का प्रयोग :

- जमीन को इस तरह से जोता जाता है कि वह ठीक से नरम हो जाए और उसमें कोई खरपतवार भी न हो।
- खेत तैयार करते समय उर्वरक मिट्टी में मिलाई जाती है जिसकी मात्रा 10 टन प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है।

पौध का प्रत्यारोपणः

- बसन्त के मौसम में जमीन के अन्दर भू–स्तरी भाग के 10–15 सेंटीमीटर लम्बे टुकड़े, जिनमें 2–3 अंकुरण हों, जमीन में 6–8 से.मी. की गहराई में और 60X45 या 90X45 सें. मी. के अन्तर में लगाया जाता है।
- भूस्तरी 10–20 दिन में अंकुरित होना शुरू हो जाती है।
- जब तक काटे गये टुकड़े जमीन में स्थिर नहीं हो जाते और अंकुरित होना शुरू नहीं हो जाते, हल्की व बार–बार सिंचाई करना आवश्यक है।
- जब पौधे 20–30 सेंटीमीटर की लम्बाई तक आ जाते हैं तो उनकी जड़ों के आसपास मिट्टी चढ़ाई जाती है, इससे जड़ों के विकास में मदद मिलती है।
- बीच में अन्तर प्रजातियों की फसलें जैसे गाजर, आलू, बंद गोभी आदि भी लगाई जा सकती है।
- खेत को खरपतवार से मुक्त रखा जाता है।

सिंचाई की विधियां

- शुष्क गर्मी के दिनों में फसल की 30–45 दिनों में एक बार सिंचाई करना आवश्यक है।
- पौधों से नवंबर में पत्ते झड़ना शुरू हो जाते हैं। अतः पौधों की जड़ों की सेहत को ठीक रखने के लिए सर्दियों में एक या दो बार सिंचाई करना अच्छा रहता है।
- पूरे वर्ष में फसल को 7–10 बार सींचा जाता है।
- यह जरूरी है कि सिंचाई या वर्षा के दौरान पौधों के नीचे पानी का जमाव न हो। इससे पौधों में कीड़े व वाइरस लग जाते हैं, जिनसे वे खराब होना शुरू हो जाते हैं।

फसल का प्रबंधन

फसल पकना और उसकी कटाई :

- पौधे लगाने के बाद 3 या 4 वर्ष के बाद ही अच्छी पैदावार होती है।
- यदि फसल की कटाई सर्दियों के मौसम में यानि नवम्बर–दिसम्बर में की जाए तो जड़ों में ग्लाईसिरहिजिक रसायन की मात्रा अधिक पायी जाती है।